International Journal of Technology and Applied Science (IJTAS)

E-ISSN: 2230-9004 ● Website: www.ijtas.com ● Email: editor@ijtas.com

अज्ञेय के साहित्य में जीवन-मूल्य

डॉ. विजय लक्ष्मी शर्मा

सहायक प्रोफेसर

हिंदी विभाग, सरकारी कॉलेज, धौलपुर (राजस्थान).

सार:

अज्ञेय अपने लेखकीय जीवन में वास्तव में धार्मिक सांस्कृतिक, उदारता के जमीन पर खड़े होकर परम्परा स्मृति से जुड़े विविध पक्षों पर विचार क्र रहे थे | अज्ञेय ने संकीर्ण हिन्दू अस्मिता पर जोर देने के कारण उन्मुक्त बौद्धिकता की साहित्यिक पहचान पर जोर दिया है | उनके द्वारा किसी धर्म पर धार्मिक मिथकों को साहित्य की विषय वस्तु न बनाया, यही उनकी उन्मुक्त धार्मिक चेतना का साक्ष्य है | उन्होंने हिन्दू व् मुस्लिम साम्प्रदायिकता को निशाने में रखते विभाजन हुआ | शरणार्थी रुमांचकों पर छः कहानियाँ लिखी | ये कहानियां है-लेहर बॉम्सन, शरणार्थी, बदला, रमन्ते तत्र देवता, मुस्लिम-मुस्लिम भाई-भाई, नारंगियाँ एवं ग्यारह कवितायें लिखी थी | चरम पागलपन उग्रसामूहिक मानवता की लौह बुझती नहीं | अपनी कहानियों में उन्होंने ऐसे चरित्रों का वर्णन किया है जो धर्म की आक्रामक कट्टरता का समर्थन करने के स्थान पर उसका प्रतिकार करते है | कहानी जीवन के भोगे हुए अनुभूत सत्य के क्षणों का प्रतिबिम्ब देती है | कहानी छोटी सी घटना के माध्यम से जो कौंध, जो तड़पन, जो पीड़ा और जो उदवेलन छोड़ जाती है, वह अध्येता के मन मस्तिष्क में मूल्य बनकर अमित हो जाते है | अज्ञेय की कहानियों में जीवन मूल्यों के लिए ही श्रम किया गया है | उनकी लेखनी जीवन मूल्यों के लिए ही संघर्ष करती है, मूल्यों को ही ट्रष्टी है और मूल्यों की ही स्थापना करती है | इस आलेख में हम चर्चा करेंगे: अज्ञेय के साहित्य में जीवन मूल्य

बीज शब्द: अज्ञेय, साहित्य, जीवन-मूल्य, धार्मिक सांस्कृतिक, महान कवि, विचार, संवेदना, प्रयोगवाद, तार सप्तक, रचनाकार

परिचय:

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' (७ मार्च, १९११ - ४ अप्रैल, १९८७) हिन्दी में अपने समय के सबसे चर्चित कवि, कथाकार, निबन्धकार, पत्रकार, सम्पादक, यायावर, अध्यापक रहे हैं। इनका जन्म ७ मार्च १९११ को उत्तर प्रदेश के कसया, पुरातत्व-खुदाई शिविर में हुआ। बचपन लखनऊ, कश्मीर, बिहार और मद्रास में बीता। बी.एससी. करके अंग्रेजी में एम.ए. करते समय क्रांतिकारी आन्दोलन से जुड़कर बम बनाते हुए पकड़े गये और वहाँ से फरार भी हो गए। सन् १९३० ई. के अन्त में पकड़ लिये गये। अज्ञेय प्रयोगवाद

एवं नई कविता को साहित्य जगत में प्रतिष्ठित करने वाले कवि हैं। अनेक जापानी हाइकु कविताओं को अज्ञेय ने अनूदित किया। बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी और प्रखर कवि होने के साथ ही साथ अज्ञेय की फोटोग्राफ़ी भी उम्दा हुआ करती थी। और यायावरी तो शायद उनको दैव-प्रदत्त ही थी ।

अज्ञेय, हिंदी साहित्य के महान कवि और लेखक, ने अपने साहित्यिक कार्यों में भाषा और शिक्षा के महत्व को गहरे तरीके से समझा और प्रस्तुत किया है। उनका मानना था कि भाषा केवल संवाद का साधन नहीं, बल्कि विचारों और संस्कृति का संरक्षक भी है। अज्ञेय ने अपने लेखन में भाषा के माध्यम से समाज, मनुष्य और जीवन के जटिल पहलुओं को प्रकाशित किया। उनकी भाषा शिक्षा की अवधारणा में केवल व्याकरण और शब्दावली नहीं, बल्कि विचार, संवेदना और अभिव्यक्ति के रूप में भाषा की शक्ति को स्थान दिया गया।

अज्ञेय की भाषा को आधुनिक हिंदी कविता का प्रतीक माना जाता है, जिसमें उन्होंने अभिव्यक्ति की नवीनता, रूपक और प्रतीकात्मकता का भरपूर उपयोग किया। उनकी रचनाएँ साहित्यिक गहराई और सामाजिक यथार्थ को जोड़ने वाली कड़ी हैं। उनके अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि एक संवेदनशील, विचारशील और समाज के प्रति जागरूक नागरिक तैयार करना है। [१]

अज्ञेय को कविता में 'प्रयोगवाद' का प्रवर्तक कहा जाता है। उनके संपादन में निकले 'तार सप्तक' और 'दूसरा सप्तक' की प्रयोगवादी काव्य प्रवृत्तियों को देखते हुए इसे एक नई धारा के रूप में चिह्नित किया गया। इसे पूर्व की काव्य प्रवृत्तियों 'छायावाद' और 'प्रगतिवाद' की प्रतिक्रिया में व्युत्पन्न माना गया है। अज्ञेय को 'नई कविता' धारा का भी पथ-प्रदर्शक माना जाता है। उनके संपादन में प्रकाशित 'दूसरा सप्तक' और 'तीसरा सप्तक' के कवि नई कविता के प्रमुख कवियों में शामिल हैं।

अज्ञेय के कथा-साहित्य में जीवन मूल्य सहजता से देखने को मिल जातें है | रचनाकार अज्ञेय की कुल ६७ कहानियों में विभिन्न प्रकार के परिदृश्य परिकल्पनाए उभरकर सामने आयीं है | आज समाज में विभिन्न मूल्यों (मानवीय, सामाजिक, चारित्रिक, नैतिक) का पतन हो रहा है | इन विषयों को रचनाकार अज्ञेय ने बड़ी सतर्कता से उकेरा है | पर्दे के आड़ में हो रहे अनैतिक कृत्य कब तक छुपे रहेंगे निश्चय ही वे लेखनी के माध्यम से समाज के सामने आयेंगे |

१. मानवीय मूल्य:

अज्ञेय की कहानियों में मानवीय मूल्य पग-पग में विद्यमान है | वे दानव को मानव और मानव को महामानव बनाना चाहते है | वैयक्तिक कमियों को चुपके से खींच लेना चाहते है, वे मानव को मानवता की ओढ़नी के साथ समाज के सामने रखना चाहते है |

२. सामाजिक मूल्य:

व्यक्ति की प्रगतिशीलता और उत्कर्ष यात्रा की परिणति है, सामाजिकभावना | मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है | समाज में जन्म लेता है, समाज में पलता है, समाज के बिच वह कार्य करता है, समाज के लिए करता है और अन्त में समाज के बीच में ही उसकी जीवनलीला समाप्त हो जाती है | अरस्तू ने तो समाज की विवेचना में यहां तक कह डाला है कि - "व्यक्ति समाज से अलग नहीं रह सकता, जो समाज से अलग है, वह या तो पशु है या देवता |" ४

३ सांस्कृतिक मूल्य:

अज्ञेय यायावरी वृत्ति के ऐसे साहित्यकार है, जिसमें एक ओर घुमक्कड़ी वृत्ति है, तो दूसरी ओर व्यापक दृष्टि भी है | उनकी कहानियों में सांस्कृतिक मूल्य विविधवर्णी एवं बहुआयामी है | भारत संस्कृति प्रधान देश है | यहां विभिन्न प्रकार की संस्कृतियों का संगम स्थल है | प्राचीन समय में भारत में वैदिक संस्कृति थी यह विश्वास किया जाता है कि दक्षिण भारत की कुछ आधुनिक जनजातियों के पूर्वज प्रगैतिहासिक कल में उत्तर पश्चिम से भारत आए थे |

४. राष्ट्रिय मूल्य:

अज्ञेय जी रष्ट्रीय मूल्यों के चिन्तक है | उनकी न केवल कहानियां वरन उपन्यास, कविता संग्रह एवं यात्रावृत्तांत सभी में राष्ट्रिय मूल्य सहजता से विद्यमान है | पात्रों का रुख उनकी अभिव्यक्ति व् क्रियाकलाप भी राष्ट्रिय है | 'शत्रु' नामक कहानी में 'ज्ञान' नाम का पात्र संसार का नेता बनकर सामने आता है और समाज का प्रतिनिधित्व करता है | [२]

साहित्य की समीक्षा

अज्ञेय ने यात्रा-साहित्य संबंधी दो पुस्तकों की रचना की है, एक - 'अरे यायावर रहेगा याद' (१९५३) जिसमें अज्ञेय की भारतीय यात्राओं का विशद चित्रण है और दूसरा है 'एक बूँद सहसा उछली' (१९६५) जिसमें उनके युरोपीय यात्राओं का वर्णन है। इनके अतरिक्त अज्ञेय ने 'जन जनक जानकी' (१९८४) शीर्षक यात्रा-पुस्तक का संपादन भी किया है। अज्ञेय के यात्रा-वृत्तांतों में भौगोलिक सूचनाओं के अतिरिक्त संस्कृति, सभ्यता, दर्शन एवं इतिहास की विस्तृत जानकारी मिलती है। इस संदर्भ में प्रगतिशील आलोचक रामविलास शर्मा लिखते हैं कि " जो काम उनके पिता ने पुरातत्व क्षेत्र में किया - जमीन से शिलालेख, मूर्तियों के निकालने का कार्य - वही काम अज्ञेय अंतिम वर्षों में अपने भारतीय अतीत के विशाल स्मृति प्रदेश में करना चाहते थे, इतिहास की राख-मिट्टी में दबे उन सब मील के पत्थरों को खोदकर बाहर निकालना, जिन पर भारतीय संस्कृति के पड़ाव-चिह्न अंकित थे।" निश्चित ही अज्ञेय अपने यात्रा वृत्तांतों के माध्यम से भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग - मिथकों, पौराणिकथाओं, को उत्कीर्णित करते हैं, जो सैकड़ो वर्षों से हमारी वाचिक और साहित्यिक परंपरा में किसी न किसी रूप में विद्यमान रहे हैं। [३]

सामाजिक मूल्य के संदर्भ में रचनाकार की लेखनी से प्रस्फुटित कुछ अंश देखिए - "अजीब प्राणी है - मानव | कौए तक को जब रोटी का टुकड़ा पड़ा हुआ दीखता है, तो वह उसे उठाने से पहले कॉव-कॉव करके अपनी बिरादरी को जुटा लेता है और एक मानव है कि अच्छी चीज देखकर सबसे पहले यह सोचता है कि किस-किस को इससे वंचित रख सकता हूं या बहिष्कृत क्र सकता हूं.... | " अज्ञेय का समाज बौद्धिकतावाद से उत्पन्न कुंठाओं, मानसिक विकृतियों से संघर्ष करता है | अतः अज्ञेय की कथाओं में चित्रित सामाजिक मूल्य, ग्रामीण मूल्य कम है | नगर की समस्याओं से सम्बद्ध मूल्य अधिक है |

सामाजिक मूल्यों में धर्म का छदम, आचरण का आडम्बर, चरित्र का दोगलापन, नकली मुखौटे का निदर्शन, ऐसे तत्व है, जो प्रतिगामी मूल्यों को उजागर करते है | [४]

उद्देश्य:

- अज्ञेय के सृजन संघर्ष की मनोभूमि तथा युग-परिवेश से परिचित हो सकेंगी/सकेंगे,
- जीवन परिचय, रचनाकार व्यक्तित्व तथा रचनाओं के विषय में जानकारी प्राप्त क्र सकेंगी/सकेंगे,

अनुसंधान क्रियाविधि:

यह अध्ययन अन्वेषणात्मक प्रकृति का है। इस शोध पत्र को तैयार करने में प्रयुक्त आँकड़े द्वितीयक प्रकृति के हैं, जिन्हें विभिन्न प्रकाशित स्रोतों से एकत्र किया गया है। इस शोध पत्र को तैयार करने के लिए प्राप्त आँकड़े विभिन्न प्रतिष्ठित पत्रिकाओं और प्रासंगिक वेबसाइटों से लिए गए हैं।

परिणाम और चर्चा:

'अज्ञेय' का काव्य-वैशिष्ट्य सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्सयायन 'अज्ञेय' आधुनिक हिन्दी के प्रमुख साहित्यकार हैं।

अज्ञेय' इनका उपनाम है। वस्तुतः ये करतारपुर (जालन्धर) के भड़ौत शाश्वत ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए थे। इनके पिता का नाम रानन्द शास्त्री था जो भारत के पुरातत्त्व विभाग में एक उच्चाधिकारी थे। इनका बाल्यकाल विविध नगरों में व्यतीत हुआ और क्षा अर्जना की दशा भी अव्यवस्थित थी।

वस्तुतः 'अज्ञेय' आजीवन संघर्षों का सामना करते रहे। अंग्रेजी विषय में एम० ए० करने के बाद वे क्रान्तिकारी दल मेंक्रिय भाग लेने लगे। १५ नवम्बर, १९३० को वे गिरफ्तार कर लिए गए। जेल में रहकर उन्होंने छायावाद से लेकर मनोविज्ञान, जनीति, अर्थशास्त्र, कानून आदि विभिन्न विषयों का अध्ययन किया। इस काल में कवि ने न केवल शारीरिक यातना सहन की आत्म मंथन भी किया। 'अज्ञेय' ने एक कवि, उपन्यासकार, कहानीकार, निबन्धकार तथा पत्रकार के रूप में विशेष प्रसिद्धिप्त की। वे प्रयोगवादी काव्यधारा के प्रवर्तक माने जाते हैं, लेकिन नई कविता के भी एक प्रसिद्ध हस्ताक्षर हैं। उन्होंने विदेशोंअनेक बार यात्राएं की। 'अज्ञेय' की काव्यानुभूति विविध प्रकार की है। 'अज्ञेय' विरचित विभिन्न काव्य-संग्रहों के अध्ययन केचात 'अज्ञेय' के काव्य-वैशिष्ट्य का मूल्यांकन हम निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर कर सकते हैं- [५]

चित्र १: 'अज्ञेय' का काव्य-वैशिष्ट्य

(१) वैयक्तिकता और सामाजिकता इसमें दो मत नहीं कि 'अज्ञेय' के काव्य में आत्मनिष्ठता का स्वर प्रखर है। कवि ने अपने मन की सूक्ष्मतर गतिविधि को चेतन तक लाने का प्रयास किया है। यही नहीं, वह अपनी चिन्तनशील बौद्धिकता, दमित काम प्रवृत्ति आदि को भी खुलकर अभिव्यक्त करता है।

(२) प्रेमानुभूति-नई कविता में रती को वही अकुंठ रूप देने की कोशिश की गई है जो बाल्मीकि और कालिदास में देखी जा सकती है, लेकिन इन कवियों ने प्रेम के बंधे-बंधाएं रूप को स्वीकार न करके उसमें वैयक्तिक विशिष्टता लाने का प्रयास किया है। दूसरी ओर प्रयोगवादी कवियों ने राजा-महाराजाओं को स्तर से उतारकर साधनहीन मध्य वर्ग के व्यक्ति में प्रतिष्ठित किया, भाव यह है कि नई कविता में यौनाकर्षण बौद्धिक जटिलता वाले विशुद्ध मानव का शुद्ध आकर्षण है।

(३) प्रकृति वर्णन-'अज्ञेय' का मूल क्षेत्र प्रेम, सौन्दर्य और मानवीय भाव हैं लेकिन कवि ने इन दोनों उद्देश्यों से प्रकृति चित्रण भी किया है। 'अज्ञेय' ने प्रकृति चित्रण परम्परागत रूप में तथा स्वतन्त्र रूप में दोनों प्रकार से किया

४) रहस्यानुभूति जहाँ तक 'अज्ञेय' की काव्य रचनाओं में रहस्यानुभूति का प्रश्न है, इसके बारे में हमें ध्यान रखना होगा कि कवि कीकाव्य चेतना का एक और आधुनिकता से सम्बन्द्ध है और दूसरी ओर आध्यात्मिक भाव-बोध से, लेकिन यहांपर यह भी उल्लेखनीय बात है कि वे अपनी ब्रह्म सम्बन्द्धी

जिज्ञासा को अथवा जीवात्मा परमात्मा के सम्बन्द्धों को स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं करते हैं वे तो ईश्वर के प्राकृत रूप में भी विश्वास नहीं करते. [६]

बहुमुखी प्रतिभा के धनी सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' ने साहित्य में जिस किसी विधा को छुआ उसे महान कर दिया। कविता-लेखन से साहित्य-सृजन के क्षेत्र में पदार्पण करने वाले 'अज्ञेय' ने कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध, संपादन, यात्रा-साहित्य, डायरी-लेखन आदि कई विधाओं में उत्कृष्ट साहित्य लिखकर आधुनिक हिन्दी साहित्य को नई दिशा प्रदान की है। अज्ञेय ने हिन्दी साहित्य को कई श्रेष्ठतम कृतियों से नवाज़ा है जैसे कविता के क्षेत्र में 'असाध्य वीणा' है तो कथा-साहित्य में 'शेखर एक जीवनी' 'नदी के द्वीप' जैसे सशक्त उपन्यास। इसी प्रकार 'तारसप्तक' का संपादन कर उन्होंने 'प्रयोगवाद' का प्रवर्तन किया तो 'अरे यायावर रहेगा याद' के माध्यम से हिन्दी यात्रा-साहित्य को एक 'क्लासिक' यात्रा-संस्मरण दे कर यात्रा-साहित्य को परिपृष्ठ किया ।

वैसे, यात्रा साहित्य का प्रारंभिक रूप यानी यात्राओं का वर्णन वैदिक एवं संस्कृत साहित्य में भी मिलता है। पर उन्हें यात्रा साहित्य नहीं कहा जा सकता। हिन्दी क्षेत्र में यात्रा-साहित्य का पहला प्रयास ब्रजभाषा में पद्य शैली में हस्तलिखित यात्रा-कृति के रूप में मिलता है, जिसमें ब्रज-प्रदेश के मंदिरों, तीर्थ-स्थलों, प्राकृतिक दृश्यों का विवरण प्रस्तुत किया गया था। हिन्दी साहित्य में गद्य की अन्य विधाओं की भाँति आधुनिक रूप से यात्रा-साहित्य की शुरुआत भी १९वीं सदी में होती है। आधुनिक यात्रा-साहित्य का प्रारंभिक रूप विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से प्रकाश में आया। मुंशी सदासुख लाल के संपादन में प्रकाशित 'बुद्धि प्रकाश' (१८५३) नामक साप्ताहिक समाचार-पत्र में शिमला से कश्मीर तक की एक पैदल यात्रा का वर्णन है। निबंध शैली में लिखित इस यात्रा वर्णन को खड़ीबोली का पहला प्रकाशित यात्रा-वृत्त माना जाता है। कुछ अन्य विद्वानों की मान्यता है कि खड़ीबोली हिन्दी में गद्य की अन्य विधाओं की भाँति यात्रा साहित्य की शुरुआत भी भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने ही की है। भारतेंदु ने अपनी पत्रिका 'कविवचन सुधा' में निबंध शैली में अपने यात्रा-वृत्त प्रकाशित किये थे, जिनमें 'सरयूपार की यात्रा', 'जबलपुर-यात्रा', 'हरिद्वार यात्रा', 'लखनऊ यात्रा', 'वैद्यनाथ की यात्रा' आदि प्रमुख हैं। भारतेंदु मंडल के अन्य रचनाकार जैसे पं. बालकृष्ण भट्ट और प्रताप नारायण मिश्र ने भी भारतेंदु की ही तरह निबंध शैली में यात्रा-वृत्तों की रचना की हैं। सन् १९०० से बाद 'सरस्वती', 'मर्यादा', 'इन्दु' आदि पत्रिकाओं के माध्यम से यात्रावृत्तों के प्रकाशन को बहुत प्रोत्साहन मिला। [७]

हिन्दी यात्रा साहित्य के इतिहास में राहुल सांकृत्यायन सबसे महत्वपूर्ण हस्ताक्षर माने जाते हैं। उन्हें 'हिंदी यात्रा सहित्य के पितामह' के रूप में भी अभिवर्णित किया जाता है। हिन्दी में इस विधा को प्रतिष्टित करने और इसे सृजनात्मक-साहित्य की एक विधा के रूप में विकसित करने में राहुल सांस्कृत्यायन की महती भूमिका रही है। राहुल ने लगभग दो दर्जन यात्रा-ग्रंथों की है। उनके यात्रा ग्रंथों में 'मेरी लद्दाख यात्रा', 'लंका', 'तिब्बत में सवा वर्ष', 'मेरी यूरोप यात्रा', 'जापान', 'मेरी तिब्बत यात्रा', 'इरान', 'रूस में पच्चीस मास', 'किन्नर देश में', 'चीन में क्या देखा' आदि उल्लेखनीय है। उनके यात्रा ग्रंथों की विशेषता यह है कि उनमें विभिन्न देशों की संस्कृति, कला, दर्शन, साहित्य, राजनीति का विस्तृत चित्रण देखने को मिलता है। राहुल सांस्कृत्यान के समकालीन यात्रा-साहित्यकारों में स्वामी सत्यदेव परिव्राजक ('मेरी कैलाश

यात्रा' तथा 'मेरी जर्मन यात्रा'), महेशप्रसाद (मेरी ईरान यात्रा), श्री गोपाल नेवटिया (कश्मीर), पं. कन्हैय्यालाल मिश्र (मेरी जापान यात्रा, ईराक की यात्रा), गणेश नारायण सोमानी (मेरी यूरोप की यात्रा), सत्येन्द्र नारायण (दक्षिण भारत की यात्रा) आदि प्रमुख हैं। राहुल सांकृत्यायन के परवर्ती यात्रा-साहित्यकारों में अज्ञेय का विशिष्ट स्थान है। अज्ञेय के अतिरिक्त इस युग के प्रमुख यात्रा-साहित्यकारों में काका साहब कालेलकर (यात्रा का आनंद), यशपाल ('लोहे की दीवार के दोनों ओर', 'राह बीती ,'रूस में छियालीस दिन', 'पड़ोसी देशों में'), भगवतशरण उपाध्याय ('कलकत्ता से पेकिंग तक', 'सागर की लहरों पर'), प्रभाकर माचवे ('गोरी नज़रों में हम') मोहन राकेश ('आखिरी चट्टान तक'), निर्मल वर्मा (चीड़ों पर चाँदनी'), धर्मवीर भारती (यात्रा-चक्र), विष्णु प्रभाकर ('जमना गंगा केनार में', 'हँसते निर्झर दहकती भट्टी), श्रीकान्त वर्मा ('अपोलो रथ'), सर्वेश्वरदयाल सक्सेना ('कुछ रंग कुछ गंथ'), आलोक मेहता ('स्मृतियाँ ही स्मृतियाँ'), राजेश अवस्थी ('हवा में तैरते हुए') आदि प्रमुख हैं। [८]

चित्र २: अज्ञेय

विश्लेषण -

हमारी संस्कृति मूलतः एक धार्मिक संस्कृति रही है और अब भी है | भारतीय परिभाषा में धर्म वह नहीं जो कि पश्चिम एशिया अथवा योरोप में समझा जाता है अर्थात उसकी जड़ किसी अनिवार्य मत विश्वास में नहीं है जिससे इधर-उधर हटना हैरेसी अथवा कुफ्र हो जाता है | मत-विश्वास एकान्ततः व्यक्तिगत चिजमानी गई है और जीवन-दृष्टि तथा तदनुकूल आचरण पर बल दिया गया है | इसीलिए कभी-कभी खा जाता है कि भारतीय समाज एक धर्मरहित किन्तु अत्यन्त धार्मिक समाज है -ए रेलीजियस सोसायटी विदाउट ए रेलियजन | धर्म की यह विलक्षण और अद्‌वितीय परिभाषा भारतीय परंपरा और दृष्टि की एक विशेषता है | अज्ञेय के विचार से यदि धर्म की यह परिकल्पना अधिक व्यापक रूप से अपनायी गई होती तो संसार के इतिहास में लगातार होते रहे अत्याचार काफी कम हुए होते | आज भी इसकी प्रासंगिकता है हिन्दू समाज के भीतरी दोषों और उसकी परिपाटियों को अनदेखा किये बिना भी हम परिकल्पना की उदारता के बल दे सकते है |

संस्कृति और सांस्कृतिक चेतना का नारी से और नारी के स्थान से गहरा संबंध है, यह एक स्वयंसिद्ध बात है। अज्ञेय कहते हैं कि, भारतीय संस्कृति का अभिमान करने वाले सहजता से कहते हैं कि, हमारी

संस्कृति में तो नारी पूज्य है-यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते... परन्तु जो स्मृतियों और शास्त्रों में विदित है और जो आज प्रत्यक्ष है उसका वैषम्य भी देखना होगा। दो पुरुषों की लड़ाई में माँ- बहिन की गालियां क्या नारी - पूजा के सिक्के का दूसरा पहलू नहीं है? मंदिर में भी देवता की खण्डित मूर्ति की पूजा नहीं होती। हमारा परिवेश ऐसे खण्डहरों से भरा पड़ा है, नारी को देवता बनाकर हमने उसे भी उतना ही असहाय बना रखा है और सदियों से उसके प्रति अन्याय करते आये हैं। उसकी प्रतिमा भी एक बार खण्डित अथवा लांछित, चाहे झूठे ही हो जाने पर न केवल पूज्य नहीं रहती बल्कि मानो गिनती से ही बाहर हो जाती है। पर उस पर क्या-क्या अत्याचार हुए उससे मानो किसी का कोई सारोकार ही नहीं रहता - उस इकाई को हमने अपने बोध के क्षितिज से परे ठेल दिया है।

अज्ञेय एक ऐसे कथाकार हैं जिन्होंने सांस्कृतिक चेतना के अन्तर्गत नये चिंतन और नये दृष्टिकोण के माध्यम से उपन्यास और कहानी की रचना करते हैं। शेखर एक जीवनी, भाग-१, सांस्कृतिक चेतना का एक अनुपम उदाहरण अवलोकनीय है “मैं एक संदेश लाया हूँ, जो कि मेरा अपना नहीं है, जो मैंने अपने वंश-विकास से पाया है और जिसे मैं एक बाह्य प्रेरणा से बाध्य होकर कहूँगा। मेरे सब कर्म उसी प्रेरणा के फल हैं, जो मुझसे बाह्य हैं, जिससे मैं विभिन्न हूँ। मैं चाहता हूँ, उसी प्रेरणा के भविष्य को इंगित कर जाऊ, उसे अपने व्यक्तित्व से अलग एक शक्ति, एक विभूति समझकर ।" [९]

अज्ञेय के मत से नारी को पूज्य मानने में और उसे हमेशा माँ-बहिन, बहू-बेटी आदि के रूप में देखने में हम वास्तव में उसके स्वतन्त्र व्यक्तित्व को नकारने का ही रास्ता निकालते रहे हैं। पूजा और गाली एक ही सिक्के के दो रूप हैं। उसी तरह यह भी सच है कि नारी को हमेशा किसी रिश्ते में देखना जहां उसे आत्मीयता का गौरव देना है। वहां उसके स्वतन्त्र व्यक्तित्व का नकार भी है।

संस्कृति की चेतना उत्सवों और मनोरंजनों के प्रति भी एक नयी दृष्टि देती है । सिनेमा और कामिक ही नहीं बच्चों के खेल की भी संस्कृति में अपना स्थान और प्रभाव है, ये संस्कार देने और पाने के साधन हैं। इसीलिए सांस्कृतिक प्रभाव के साधन भी बनाये जा सकते हैं। संस्कृति और श्रम के रिश्ते भी चेतना के क्षेत्र में आने चाहिए। अलग-अलग संस्कृतियों में श्रम के बारे में अलग-अलग धारणाएं रही हैं और अज्ञेय के मत से उन धारणाओं को सम्पूर्णतया आर्थिक सम्बन्ध का परिणाम बताना वास्तव में सांस्कृतिक प्रक्रिया को अधूरा समझ कर उसे विकृत करना है। निःसन्देह संस्कृतियों के विकास का और उस पर आधारित श्रम-सम्बन्धों के परिवर्तन का अद्‌वितीय महत्व रहा है।"

अज्ञेय कहते हैं कि अगर हम अपनी संस्कृति के अलावा दूसरी संस्कृतियों के मूल्यों को भी पहचान और समझ सकते हैं तो हमारे संवेदन का विस्तार बढ़ता है, हम अधिक संस्कारवान होने की अर्हता प्राप्त करते हैं। और इसीलिए, अपनी संस्कृति को सम्पन्नतर बनाने की स्थिति में आते हैं। 'अकेले होने' और 'साथ होने की

व्यापक परिकल्पनाओं ने विभिन्न संस्कृतियों को जो कुछ दिया है, उसे हम पहचान सकते हैं तो हम टकराहट की स्थिति से ऊपर उठ सकते हैं। यह 'उपर उठ सकना ही हमारे सांस्कृतिक उपक्रम के मूल में होता है।

अन्तोगत्वा अज्ञेय के तीनों उपन्यासों की कथा भूमि में काफी दूरियां हे। नदी के द्वीप एवं शेखर एक जीवनी दोनो उपन्यास व्यक्ति प्रधान है जहाँ शेखर एक जीवनी में व्यक्ति क्रांति के बिस्फोट में फैल रहा है। वही नदी के द्वीप में व्यक्ति प्रेम को लेकर सिमट रहा है। अज्ञेय का तीसरा उपन्यास अपने - अपने अजनबी' कृति है, जिसमें विचार, दर्शन, चिंतन और सिद्धांतों की सघनता उल्लेखनीय और बेजोड़ है।
अज्ञेय के उपरोक्त सभी उपन्यास आधुनिक मनोविज्ञान से प्रभावित है किन्तु नदी के द्वीप का मनोवैज्ञानिक पक्ष अधिक समृद्ध है। शेखर जैसे सशक्त चरित्र का निर्माण करना अज्ञेय के स्वस्थ्य चिंतन की महती उपलब्धि है। अज्ञेय सम्पूर्ण समाज को उसके वास्तविक रूप में चित्रित करने की अपेक्षा एक व्यक्ति को विभिन्न परिस्थितियों में रखकर उसके वास्तविक जीवन की सूक्ष्मतम महसूस करने के कार्य अधिक उपयोगी या श्रेयस्कर समझते है ।
अज्ञेय के उपन्यासें मे अनवरत एक अन्वेषण की प्रक्रिया प्राप्त होती हे। मानव मूल्यों की विराटता की मर्यादा के नये प्रतिमानों की जो आधुनिक सामाजिक सौंदर्य में उतने ही समपृक्त हैं, जितने प्रचलित परंपरागत सामाजिक मान्यताओं से विच्छिन है। यह जीवन के आत्मीय अनुभवों का प्रत्यावलोकन की एक प्रक्रिया है जो व्यक्तिवाद की नई अभिव्यंजना करती है।
अज्ञेय के सभी उपन्यासों में लेखक भय, कुण्ठा अहं, काम और भयग्रस्त अस्तित्व के लिए अपनी मुक्ति की माँग कर रहा है। 'नदी के द्वीप' में इन्हीं सब कमजोरियों के साथ समस्त एशिया अथवा पृथ्वी गोलार्द्ध की मानवता युद्ध की भीषण ज्वलाओं के अंदर से अपनी भूमि का आवाहन करती हुई दिये दे रही है और अपने अपने अजनबी में यूरोप युद्ध क्षुब्ध बिक्षुब्ध क्षत बिच्क्षत मानवता अपनी मुक्ति का आश्रय खोजने में व्यस्त है अन्तर केवल इतना है कि शेखर की दृष्टि परतंत्र भारत पर रेखा और भुवन के नेत्र यूरोप की ओर उठे हैं। यूरोप की भयभीत आंखें भारत से अपनी मुक्ति की माँग कर रही है।
अज्ञेय के उपन्यासों में स्वाजाति रीति की भी चर्चा हुई है। नदी के द्वीप उपन्यास से ऐसा लगता है कि प्राचीन रूढ़ियों तथा परम्पराओं के प्रति लेखक का ह्रदय विद्रोही हो उठा है। अज्ञेय का व्यक्तित्व किसी भी पुराने व नये वाद जीवन सिद्धांत के आगे पूरा-पूरा समर्पित नहीं हो सकता है। वह अनेक वादों के सत्यों को स्वीकार करके उन्हें अपने व्यक्तित्व के माध्यम से एक नया रूप देना चाहते है। यह फ्रायड एडलर, युंग, मार्क्स, सार्त्र, इलियट आदि चिंतकों का प्रभावा है । एक साहित्यकार का दूसरे साहित्यकार से प्रभावित होना स्वाभाविक है। विशेषतयः जब दोनों सामाजिक युगचेतना एक दूसरे से मेल रखती हो। इस परिप्रेक्ष्य में निर्मल वर्मा की बात उठाई जा चुकी है कि, उनकी धारणा भारतीय और पश्चिम से अभिभूत दिखती है, जबकि अज्ञेय की भारतीयता भारतीय चिन्तन-मनन और भारतीय समाज के विश्वासों, आस्थाओं और अवधारणाओं पर आधारित है। अज्ञेय का मानना है, कि महाभारत काल से ही इस देश में यह समझ काम करती रही है कि भारत एक इकाई है, भौगोलिक इकाई भी एवं सांस्कृतिक इकाई भी और भारतीय रचना में भारत भूमि को एक इकाई के रूप में ही देखा गया है।

निष्कर्ष:

सांस्कृतिक समग्रता पर विचार करते हुए अज्ञेय ने लिखा है, मेरे पात्र चाहे भारतीय हों, चाहे अभारतीय, और भारतीय होकर चाहे एक प्रदेश के हों, चाहे दूसरे प्रदेश में सम्प्रेष्य बात यह है कि एक भारतीय उस तरह देखता, सोचता, भोगता और जीता है, जिस तरह देखने, सोचने, भोगने और जीने वाले को भारत ने बनाया है, एक समग्र भारत ने। लेखक और राज्याश्रय कोई नया मुद्दा नहीं है बल्कि आज लेखकों को ज्यादा राज्याश्रय प्राप्त है। अज्ञेय नया वितान सृजित करता है। उनका मन्तव्य यह था कि सांस्कृतिक चेतना में अभिजात्य या उच्च वर्ग के सरोकार की बात नहीं है बल्कि पूरे समाज को अपने में समादृत करती है। अज्ञेय की कहानियों में कुछ मूल्य सहज प्रवृत्ति के रूप में मानव जीवन के नैसर्गिक स्वभाव में आतें हैं। कुछ मूल्य ऐसे भी हैं, जो रचनाकार के विचार साधना में पलते रहते हैं और परिपक्व होकर शब्द रूप में प्रकट होते हैं। ये लेखक की संकल्पना के मूल्य होते हैं, जिनसे वह एक इच्छित व्यक्तित्व, अभिलसित संसार और कल्पना जगत का व्यक्तित्व पुंज गढ़ता है ऐसे मूल्य मानव और मानवता के लिए प्रेरणास्पद होते हैं। उनकी समस्त कहानियों में स्वानुभूति है, जिसमें रचनाकार अपनी आत्मा उड़ेलकर रख देता है। जो उद्‌गार रचनाकार के अन्तर की गहराई से आते हैं, वे पाठक के हृदय में उतनी ही गहराई बनाते हैं। अज्ञेय की कहानियों को पढ़कर ऐसा लगता है कि कहानी लिखने की अपेक्षा यह कहीं अच्छा है कि मनुष्य अपने जीवन को इस ढंग से बनाने का प्रयत्न करे कि दूसरे लोग उसकी जीवन कहानी को बड़े चाव के साथ देखें और पढ़ें। जो कहानी लिखते हैं और साथ ही अपने जीवन को कहानीमय बना सकते हैं, ऐसे रचनाकार हिन्दी जगत में विरले हैं।

संदर्भ:

१. मिश्र, विद्यानिवास (मार्च १९९९). अज्ञेय प्रतिनिधि कविताएं एवं जीवन-परिचय. दिल्ली: राजपाल एण्ड सन्ज़. p. आवरण.
२. मिश्र, विद्यानिवास (२००७). अज्ञेय. दिल्ली: राजपाल. पृष्ठ 6. आईएसबीएन ९७८८१७०२८४०१७.
३. गोदारण, अंक ११, पृ. ८१
४. अज्ञेय, सम्पूर्ण कहानिया, पृ. ४७३
५. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, रामस्वरूप चतुर्वेदी, पृ-२८१
६. अरे यायावर रहेगा याद, अज्ञेय, पृ.१४३
७. केन्द्र और परिधि, अज्ञेय, पृ. २८४
८. अज्ञेय-सम्पूर्ण कहानियां सेव और देव, पृ. ३८३.
९. वही, कैसाड्रा का अभिशाप, पृ. ३९६